विन्देम देवतां वाचम्

हिन्दुस्तानी एकेडमी
उत्तर प्रदेश

गोरखबानी का मर्म और उसका लोक व्यापी प्रसार

राष्ट्रीय संगोष्ठी

माघ शुक्ल पक्ष षष्ठी २०७७ (18 फरवरी 2021)

आयोजक

हिन्दुस्तानी एकेडेमी उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

एवं

राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर

परिचय

गोरखनाथ का व्यक्तित्व बहुआयामी है। हिंदी साहित्य में ऐसी मान्यता है कि इनका आविर्भाव विक्रम संवत की दसवीं शताब्दी में हुआ। गुरु गोरखनाथ कवि हैं, योगी हैं इसके साथ ही साथ समाज को अपनी योग–साधना एवं वाणी से नई दिशा देने वाले समाज सुधारक भी हैं। इनका व्यक्तित्व भारतीय संस्कृति में स्वतंत्र एवं मौलिक है। भारतवर्ष को बुद्ध के बाद महामानवता का पाठ पढ़ाने वाले गुरु गोरखनाथ ही थे ।

जब बौद्ध धर्म का वज्रयान शाखा भोग विलास में डूब गया था और समाज किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया था तब गोरखनाथ ने अपने हठयोग से समाज को एक नया रास्ता दिखाया । ज्ञान की जटिलताओं को दूर कर उसे सहज बनाया। समाज में व्याप्त पाखंड के आच्छादन को दूर किया। मानवीय मूल्य एवं नैतिकता की समाज में गिरती दशा को उबारने में गोरखनाथ का बहुत बड़ा योगदान है। उन्होंने समाज में व्याप्त व्यभिचार को दूर किया। इसीलिए वह किसी एक जाति धर्म विशेष के नहीं अपितु भारतवर्ष के गुरु हैं। इनकी लोक व्याप्ति भारतवर्ष में उत्तर से लेकर दक्षिण तक, पूरब से लेकर पश्चिम तक है। इतना ही नहीं भारतवर्ष के लगभग हर क्षेत्र में इनसे जुड़ी कुछ न कुछ कथाएं जरूर मिलती हैं।

गोरखनाथ भारतीय संस्कृति के गौरव हैं। जिनके जीवन एवं मर्म को जानने के लिए लोग आज भी लालायित रहते हैं। शंकराचार्य के बाद इतना प्रभावशाली और इतना महिमान्वित महापुरुष भारतवर्ष में दूसरा नहीं हुआ। आज भी भारतवर्ष के कोने – कोने में इनके अनुयाई पाए जाते हैं। हिंदी साहित्य में भक्ति आंदोलन के पूर्व सबसे शक्तिशाली धार्मिक आंदोलन गोरखनाथ का योग मार्ग ही मिलता है। भारतवर्ष की ऐसी कोई भाषा नहीं है जिसमें गोरखनाथ संबंधी कहानियां न पायी जाती हो, इन कहानियों में परस्पर ऐतिहासिक विरोध है फिर भी इससे एक बात तो स्पष्ट हो जाती है कि दृ गोरखनाथ अपने युग के सबसे बड़े अगुआ थे।

इन्होंने ज्ञान की गंगा को जन–जन के लिए सुलभ बनाने हेतु जनपदीय भाषा में संवाद किया है । यही कारण है कि उन्होंने लोकभाषा में अपना उपदेश दिया। इस प्रकार वह अपनी वाणी से जनपदीय भाषाओं को महिमामंडित करके जनपदीय भाषाओं, साहित्य और संस्कृति के लिए स्वर्णिम मार्ग प्रशस्त किया। जिसकी परिणति हिंदी साहित्य के इतिहास में भक्ति काव्य के रूप में मिलती है। जिसे हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाता है। गोरखनाथ ज्ञान सुमेरू हैं। जिससे विभिन्न रूपों में विभिन्न क्षेत्रों के लिए ज्ञान गंगा प्रस्फुटित हुई। डॉ पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल ने गोरखनाथ रचित चालीस पुस्तकों की खोज किया है। जिसके आधार पर उन्होंने अपनी पुस्तक 'गोरखवाणी' का संपादन किया है, किन्तु गोरखनाथ के नाम पर जो पद मिले हैं वह कितने पुराने और प्रमाणिक हैं यह कहना कठिन हैं । इनमें बहुत प्रक्षिप्त जुड़ गए हैं। इन पदों में कई दादूदयाल के नाम पर ,कई कबीर के नाम पर और कई नानकदेव के नाम पर पाए गए हैं । कुछ पद लोकोक्ति का रूप धारण कर गए हैं तो कुछ ने जोगीड़ा का रूप ले लिया है। आज जब ज्ञान और अनुशंधान के नए–नए तरीकों का हम ईजाद कर लिए हैं तब पुनः हमें गोरखनाथ के पाठानुसंधान करने की आवश्यकता है। गोरखनाथ के जीवन और साहित्य का महत्व भारतवर्ष में बहुत अधिक है। खासकर ऐसे समय में जब भारतीय समाज अति आधुनिकता की चकाचौध में लगातार नैतिक पतन की ओर अग्रसर है। गोरखनाथ की वाणी एक उम्मीद है। अँधेरे समय का प्रकाशपूंज है एवं कठिन समय का धैर्य है।

हबकि न बोलिबा ठबकि न चलिबा, धीरै धरिबा पांव ।
गरब न करिबा सहज रहिबा, भणत गोरख राव।।

गर्व न करना , सहज ही रहना जैसी सीख देने वाले गोरखनाथ आज हमें बार–बार याद आते हैं। कभी वह संकट के क्षण में धैर्य और साहस की पुंज की तरह, तो कभी आज के स्वार्थी एवं भोग परक राजनीति में संबल प्रदान करते हुए गोरक्ष दृमक्षेन्द्र संवाद की तरह याद आते हैं। आज जब हमारे समाज में मानवीय मूल्यों का लगातार ह्रास हो रहा है तथा लोगों की मानसिकता दूषित हो रही है तब ऐसे समय में गोरखनाथ के मूल्यों एवं आदर्शों की अधिक आवश्यकता महसूस हो रही है। इसलिए आज के इस दौर में उन पर बहस एवं परिचर्चा करना ज्यादा समीचीन एवं प्रासंगिक होगा ।

संगोष्ठी का विषय क्षेत्र

1-गोरखनाथ और समकालीन समाज।
2-गोरखनाथ और हिंदी साहित्य ।
3-आधुनिक हिंदी साहित्य पर गोरखनाथ का प्रभाव ।
4-समकालीन हिन्दी कविता और गोरखनाथ।
5- गोरखनाथ की प्रासंगिकता ।
6- गोरखनाथ और किंवदंती ।
7-गोरखनाथ का दर्शन और भारतीय समाज ।
8-गोरखनाथ का हठयोग।
9-गोरखनाथ का मानवतावादी चिंतन।
10-गोरखबानी का पाठ निर्धारण ।
11-गोरखनाथ की लोक व्याप्ति ।
12-भारतीय चिंतन परंपरा में गोरखनाथ का योगदान।
13-भारतवर्ष में गोरक्षपीठ का इतिहास ।
14- गोरखनाथ के सपनों का देश ।
15- भारतीय शिक्षा व्यवस्था और गोरखनाथ का उपदेश ।
16- गोरखनाथ: आलोचकों की नजर में ।
17- साहित्य,समाज एवं राजनीति में गोरखबानी का महत्व।

*****

समितियां

प्रचार-प्रसार समिति
डॉ बी एन पाण्डेय
डॉ. शिव कुमार यादव

स्वागत समिति
डॉ. दीप्ति सिंह
डॉ. सारिका सिंह

साज-सज्जा समिति
डॉ. अनिता कुमारी
सुश्री लवली सिंह
श्रीमती सुषमा

जलपान एवं भोजन समिति
डॉ. हरेन्द्र यादव
डॉ. शैलेन्द्र कुमार यादव
श्री अश्विनी यादव (शोध छात्र)
श्री अतुल त्रिपाठी (शोध छात्र)

पंजीकरण समिति
डॉ. एखलाक खान
डॉ.दिवाकर मिश्र
श्री विनय प्रकाश(शोध छात्र)
श्री रमेश यादव (शोध छात्र)
सुश्री अनुराधा(शोध छात्रा)

आनलाइन प्रसारण समिति
डॉ. संतन कुमार राम
डॉ. अकबरे आजम
श्री राघवेन्द्र प्रताप सिंह (शोध छात्र)

परिवहन समिति
डॉ. शम्भू शरणप्रसाद
डॉ. . विकास सिंह
डॉ. एखलाक खान
श्री दुर्गा प्रसाद विश्वकर्मा (शोध छात्र)

बिजली/ जनरेटर
श्री श्रीराम कुशवाहा
श्री जबी उल्लाह

आयोजन सचिव
डॉ. संतन कुमार राम
डॉ. विकास सिंह
डॉ. अमित यादव

अनुशासन समिति
डॉ. सत्येन्द्र सिंह
डॉ.शम्भूशरण
डॉ.अमित यादव

परामर्श मण्डल

1.प्रो. चिन्तरंजन मिश्र, पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर
2.प्रो. गजेन्द्र पाठक, अध्यक्ष, हिंदी विभाग,हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय
3.प्रो. श्रद्धा सिंह, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
4.प्रो. मनोज कुमार सिंह,हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
5.प्रो. निरंजन सहाय,हिंदी विभाग, काशी विद्यापीठ, वाराणसी
6.प्रो. आशा यादव, हिन्दी विभाग, बसन्त कन्या महाविद्यालय,वाराणसी
7.प्रो. दिनेश कुशवाह,रीवा विश्वविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश
8.डॉ. मीनू पाठक, संगीत विभाग, बसन्त कन्या महाविद्यालय,वाराणसी
9.डॉ रविकांत, हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
10.डॉ. उदयभान यादव, ग.प्र.रा.म.स्ना.महा. अम्बारी, आजमगढ़
11.डॉ. प्रमोद कुमार श्रीवास्तव, स्वामी सहजानंद स्ना. महा., गाजीपुर
12.डॉ. जगदम्बा दूबे, डी.ए.वी. कालेज, आजमगढ़
13.डॉ. लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
14.डॉ. विनम्रसेन सिंह, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
15.डॉ. जनार्दन सिंह, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
16.डॉ. हरिश कुमार यादव, महिला महाविद्यालय, वाराणसी
17.डॉ. विवेकानन्द, महिला महाविद्यालय, वाराणसी
18.डॉ. विंध्यांचल यादव, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
19.डॉ. महेन्द्र कुशवाहा, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
20.डॉ. विनय कुमार दूबे, पी.जी. कालेज, गाजीपुर
21.डॉ. उषा भारती, पी.जी. कालेज, गाजीपुर
22.डॉ. पी.एन. सिंह, वरिष्ठ साहित्यकार,गाजीपुर
23.प्रो.चौथीराम यादव,वरिष्ठ आलोचक, वाराणसी
24.डॉ. पुनीत बिसारिया, बु.वि.वि.,झाँसी
25.डॉ. अनिल अविश्रांत, एसोसिएट प्रोफेसर,झाँसी
26.डॉ. पूजा गुप्ता, बी.एन मण्डल विश्वविद्यालय,मधेपुरा, बिहार
27.डॉ. अमरनाथ प्रजापति, श्री अक्क महादेवी महिला विश्वविद्यालय, कर्नाटक
28.डॉ. चन्द्रकान्त सिंह, हिमाचल विश्वविद्यालय धर्मशाला,शिमला
29.डॉ. सुमन सिंह, राजकीय महिला महाविद्यालय, फतेहपुर
30.डॉ. पवन यादव, राजकीय महाविद्यालय, कुछेछा, हमीरपुर
31.डॉ. मनोज कुमार मौर्य, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, त्रिपुरा
32.डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा, तेजपूर विश्वविद्यालय
33.डॉ. सुनील यादव, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
34.डॉ. कुलभूषण मौर्य, पूर्णिया बिहार
35.डॉ. अनुज कुमार, नागालैण्ड
36.डॉ. जितेन्द्र नाथ मिश्र
37.डॉ. नरेन्द्र नाथ मिश्र
38.डॉ. किरण शर्मा
39.डॉ. क्षमाशंकर पाण्डेय
40.वीरेंद्र यादव,लखनऊ
41.हरिराम, द्विवेदी

सह संयोजक

डॉ0 संगीता मौर्य 9026115390

डॉ0 शशिकला जायसवाल 9455868861

संयोजक

डॉ0 निरंजन कुमार यादव

8726374017

संरक्षक

डॉ0 उदय प्रताप सिंह

अध्यक्ष

हिन्दुस्तानी एकेडमी उत्तर प्रदेश,प्रयागराज।

प्रो0 सविता भारद्वाज

प्राचार्य

राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय गाजीपुर

आयोजन समिति - समस्त महाविद्यालय परिवार।